MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 02, December 2023

भूमंडलीकरण: समाज पर प्रभाव और स्वयं प्रकाश

अंसारी महमदनिज़ामुद्दीन, शोधार्थी, उत्तरगुजरात, यूनिवर्सिटी पाटन (गुजरात)

सारंश

भूमंडलीकरण ने समग्र विश्व को एक सूत्र में पिरो दियां है। आज किसी भी देश और वहाँ की संस्कृति को जानना आसान हो गया है। यही बजह है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकार हमारी संस्कृति दूषित हों रही है। आज पाश्चात्य संस्कृति हमारे प्राचीन परम्पराओं का नाश कर रही है। समाज में मानवीय मूल्य खत्म हों रहे हैं। उपभोक्तावादी जीवन के चंगुल में समाज फसता जा रहा है। मनुष्य आत्मकेंद्रित और कुंठित बंता जा रहा है। बड़े-छोटों के बीच का मान-सम्मान जाता रहा है। लोग पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रहे हैं। फलस्वरूप समाज में भोग, व्यभिचार, मूल्यहीनता, स्वार्थ, अकेलापन, संकीर्णता, कुंठा जैसे गुण व्याप्त हो गए हैं। स्वयं प्रकाश अपनी कहानी बलि, गौरी का गुस्सा और संधान में इनहि समस्याओं को रेखांकित करते हैं और समाज को इन ताकतों से लड़ने की सलाह देते हैं।

बीज शब्द- भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोकतवाद, पूंजीवाद, मशीनिकरण, महत्वाकांषा, लालसा, शोषण, प्रकृति, संस्कृति, समाज, परिवार, गांव, शहर, अकेलापन, कुंठा, मानवीय मूल्य, युवा, मध्यवर्ग, गरीब

सोध आलेख

भूमंडलीकरण भारत देश में एक विवादास्पद विषय रहा है। इसके प्रति आलोचकों एवं साहित्यकारों के विभिन्न मत-मतांतर है। कुछ लोग इसे सामाजिक एवं संस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम मानते है, कुछ लोग इसे उपनिवेशवाद से भी अधिक खतरनाक। स्वयं प्रकाश दूसरे श्रेणी में आते हैं। उनके हिसाब से भूमंडलीकरण भारत देश और संस्कृति के लिए खतरनाक है। हालांकि वे इसके बिलकुल खिलाफ नहीं है। परंतु वे चाहते है कि वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति के बीच एक संतुलन स्थापित हों, ताकि हमारा समाज और संस्कृति इससे बचे रहे। स्वयं प्रकाश अपनी कहानियों में इसी चिंता के साथ दस्तक देते हैं।

हमारा समाज आज जिस तेजी से बाजारवाद और उपभोगतावाद की चपेट में आ रहा है, यह चिंता का विषय है। भूमंडलीकरण से एक तरफ देश प्रगति कर रहा है, दूसरी तरफ समाज को इसका खामियाजा भी भुगतना पड़ रहा है। बाजारबाद के कारण समाज में उपभोक्तावादी जीवन दृष्टि का तेजी से संचार हों रहा है। गांव तेजी से सिकुड़ रहे है तथा

शहर विस्तार पा रहे हैं। युवा भोग की तरफ पलायन कर रहे हैं। फलस्वरूप पारिवारिक विघटन, समाज में बढ़ता वैमनष्य, प्रतिस्पर्धा, सहनशीलता में कमी, गरीबों का शोषण और अपराध में बढ़ोतरी जैसे समस्याएँ समाज को अंदर से खोखला बना रही है। मंडलीकरण ने मानवीय मूल्य का ही नुकसान नहीं किया, परंतु देश में स्थित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को भी चोट पहुंचाई है। समाज में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण देश गरीब और मध्यवर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। मध्यवर्गीय पारिवारिक संरचना बिखर गई है। लोगों में संत्रास, अकेलापन, कुंठा जैसे विकार घर कर गए है। दूसरी तरफ गांव में उद्योगों का विस्तार, गांव का बाजार में परिवर्तित होना, ग्रामीणों का शहर की तरफ पलायन, उछ वर्ग का महत्वाकांक्षी होना, पूँजीपतियों ध्वरा गरीबों की जमीन हथियाना तथा गांव और ग्रामीणों का दोहन करना। इन सभी समस्याओं को समकालीन लेखक स्वयं प्रकाश ने अपनी कहानियों का विषय बनाया है।

वैश्वीकरण से देश का जितना विकास हुआ है, उतना नुकसान भी झेलना पड़ा है। स्वयं प्रकाश उत्तर आधुनिकता से देश को आगाह कराते हुए लिखते हैं- "यह बेशक साम्राज्यवादी हमला है और उपनिवेशवाद से अधिक भयानक। अधिक भयानक इसलिए कि इसके सूचना-विस्फोट और संचार-क्रांति की अलामतें जुड़ी हुई है। सांप्रदायिकता, पुनरुत्थानवाद और फ़ासिज़्म जुड़ा हुआ है। यह हमला न सिर्फ लोकतंत्र के खिलाफ है, बल्कि स्वतंत्र राष्ट्र की स्वायत्तता के भी खिलाफ है और उद्योग, व्यापार, वाणिज्य तथा हर तरह की राजनीति ने इसके आगे निष्प्रतिरोध समर्पण कर रखा है।"1 लेखक देश में बढ़ते भूमंडलीकरण के असीमित प्रभाव से काफी चिंतित हैं। इसीलिए उन्होने वैश्वीकरण को उपनिवेशवाद से भी अधिक भयावह और खतरनाक बताया है।

बाजारवाद ने न सिर्फ समाज और संस्कृति को प्रभावित किया है, बल्कि साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। आज अखबारों में साहित्य की जगह प्रचारों की भरमार है। साहित्य और शुद्ध भाषा गायब हो गई है। साहित्यिक पत्रिकाएं भी घाटे में चल रही है। लोग इंटरनेट से सूचना की आपूर्ति करने लगे हैं। इस संदर्भ में लेखक कहते हैं- "इसी बीच बाजार की शक्तियां इतनी शक्तिशाली हो गई कि उन्होंने भी साहित्य पर और साहित्य की रचना पर अपना प्रभाव डालना शुरू कर दिया। साहित्यिक रचनाओं को प्रकाशित करने वाली व्यावसायिक पत्रिकाएँ एक-एक करके बंद होती गई। पत्रकारिता के लिए पहले जहां साहित्यिक अभिरुचि को एक गुण माना जाता था, अब उसे दोष माना जाने लगा।"2

स्वयं प्रकाश की कहानी 'बलि' भूमंडलीकरण से उपजी पूंजीवादी व्यवस्था और उस सोच को समर्थन करने वाली मानसिकता के खिलाफ लिखी गई कहानी है। एक आदिवासी अभावग्रस्त गांव जहां प्रकृति और जीवन के तदात्मय से लोग अपना जीवन गुजार रहे थे। गांव में विपन्नता और गरीबी थी। लेकिन फिर भी ग्रामीण परिश्रम और प्रकृति से अपनी आजीविका किसी तरह चला रहे थे। वे आपस में लड़ते-झगड़ते, एक दूसरे को गालियां देते, मगर कभी वैमनष्य का भाव उनमें न आता। अभावों में भी ग्रामीण खुश थे। लेखक कहते है- "अगर सुख का मतलब पेट-भर भात और आंख-भर नींद ही होता है तो वह एक सुखी बचपन ही रहा होगा।"3

आदिवासी बहुल ऐसा गांव जहां अब तक बाजारवाद की अनुगूँज सुनाई नहीं दी थी। ग्रामीण प्रकृति से जुड़े हुए थे। मगर कुछ ही समय में सब बदल गया। यह गांव भी पूंजीवाद की चपेट में आ गया। देखते ही देखते गांव में कारखाने बनेने लगे, उध्योग स्थापित हो गए, पेड़ कटने लगे, सड़के लंबी होती गई, झोपड़ी के स्थान पर मकान खड़े हो गए। कुछ ही समय में गांव बाजार में तब्दील हो गया। बाजार बनने के कारण जिस वस्तुओं का उपभोग ग्रामीण मुफ्त मे करते अब वे बिकाऊ थी। तालाब की मछलियां, दूध, सब्जी, फल सब बिकाऊ। लेखक भूमंडलीकरण के इसी अनैतिक व्यवस्था के खिलाफ अपनी कहानी बलि में नायिका 'लड़की' के माध्यम से संघर्ष करते हैं। गांव, बाजार में तब्दील हो गया। पूँजीपतियों ने ग्रामीणों की जमीने हड़प ली। उनको शराब की लत लगा कर और कंगाल कर दिया। धीरे-धीरे ग्रामीणों से अपना गांव, अपना वजूद तक छिन लिया गया। गांव में जगड़े होने लगे, लोगों में वैमनष्य का भाव बढ़ने लगा। चारों तरफ मूल्यहीनता छा गई। उपभोगतावादी जीवन जीने की लालच में ग्रामीण युवा और विपन्न होते गए। बजारवाद के कारण एक हसता-खेलता गांव ऊझड़ गया।

गांव अब आदिवासीओं का नहीं बल्कि शहर से आएं बाबूओं का था। ग्रामीण अपने ही गांव में अजनबी। एक हसते-खेलते गांव को पूंजीवादी व्यवस्था ने समाप्त कर दियां। मानवीय मूल्य नाम मात्र रह गए। यह कहानी पूंजीवादी व्यवस्था के दुष्प्रभाव और इससे गांव में आए प्रतिकूल परिवर्तन को रेखांकित करती हमारे सामने आती है।

उपभोक्तावादी जीवन के यथार्थ को तलासती स्वयं प्रकाश की कहानी 'गौरी का गुस्सा' आज की युवा पीढ़ी के अकर्मण्यता, असंतुष्टि एवं उपभोगतावादी जीवन शैली को लेकर लिखी गई है। 'रतनलाल अशांत' जो कि पहले एक बेरोजगार और गरीब युवक था, वो हर पल अपनी किस्मत को कोसता रहता। एक दिन भगवान शिव की पत्नी पार्वती की

नजर रतनलाल पर पड़ती है और उसे वरदान में वह सब कुछ देती है जो एक पूंजीपति के पास होता है। गाड़ी, बंगला, सुंदरियाँ, ढेर सारे रुपये और हर वो चीज जो एक अमीर व्यक्ति के पास होती है। यह सब मिलने पर वह काफी प्रसन्न होता है। लेकिन कुछ समय बाद उसकी महत्वाकांशा और बढ़ती है तथा वह पुनः अशांत हों जाता है। यह जीवन शैली रतनलाल को क्षणिक खुशी देकर गहन निराशा में धकेल देती। निराशा का कारण यह भी है कि उसे यह सब बिना परिश्रम के मिला था। अतः वे इन चीजों के महत्व को समझ नहीं पा रहा था। आज के युवा पीढ़ी की यही समस्याएं है। उन्हे सब कुछ बिना परिश्रम के चाहिए और किसी तरह वह सब मिलता है तो उसका महत्व नहीं जान पाते और बुरे संगत में पड़कर अपना जीवन खराब कर लेते हैं।

रतनलाल अशांत ने पार्वती से कुल चार वरदान मांगे। पहले वरदान में मकान की प्राप्ति होती है। दूसरे में स्वच्छ मोहल्ले में आलीशान महल। तीसरे वरदान में एक सुंदर शहर तथा चौथे वरदान में एक अलग देश ही मांग लेता है। जब-जब वह पार्वती से वरदान मांगता, उसकी लालच और बढ़ती जाती। हर वरदान के साथ वह और अशांत तथा आत्मकेंद्रित बंता जाता। उपभोक्तावादी जीवन जीने की चाह में उसका अपना व्यक्तित्व ही खत्म हो गया। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। सही-गलत के बीच का फर्क जाता रहा। दुनिया की सारी सुविधा होने के बावजूद वह निरंतर अशांत और उध्वेलित बना रहत। बाजार की कोई चीज उसे आंतरिक सुख न दे पाती। यहां तक की सुंदरियाँ भी उसे काटने को दोडती। अंततः वह पार्वती से एक नई दुनिया ही मांग लेता है- "तुम मेरे कोई इत्ता अच्छा घर दिए, अच्छा मोहल्ला दिए, अच्छा शहर दिए, अच्छा देश भी दिए, तो अच्छी दुनिया देने में मौत आती थी क्या? हर चीज बोलना पड़ेगी क्या?"4 ऐसा व्यवहार देख पार्वती रतनलाल पर क्रोधित हो उठी। फलस्वरूप पार्वती ने जो कुछ भी दिया था, सब वापस ले लिया। इस कहानी में लेखक यह दिखाने का प्रयत्न करते है कि उपभोक्तावाद और बजारवाद के प्रभाव में हमारी युवा पीढ़ी इस कदर वशीभूत हो गई है कि उसका अपना व्यक्तित्व अपनी पहचान ही खों गई है। इसी अनचाहे की मांग युवाओं को ओर अधिक आत्मकेंद्रित और कुंठित बना रही हैं। जिससे बचना हमारे लिए जरूरी है।

लेखक ने प्रस्तुत कहानी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद, पूंजीवाद एवं उपभोक्तावादी जीवन शैली का पर्दाफाश किया है। रतनलाल अशांत के वरदान में उपस्थित खूबसूरत सुंदरियां, दंगों के दरमियान उच्च वर्ग की उदासीनता, पूंजीवाद के चलते पल-पल बदलती सरकारें तथा इंटरनेट के बिना रतनलाल की अशांति यह सभी परिस्थितियां यह स्पष्ट करती है कि चाहे मनुष्य कितना भी आधुनिक बन जाए शांति उसे अपना नैसर्गिक जीवन ही देता है।

'गौरी का गुस्सा' कहानी में स्वयं प्रकाश ने उपभोक्तावादी जीवन से असंतुष्ट रतनलाल के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी का चित्रित किया है, तो 'संधान' कहानी में शहर और गांव की तुलना करते हुए लेखक ग्रामीण जीवन की सुंदरता और उसके महत्व को अभिव्यक्त करते हैं। एक छोटे से गांव में रहने वाले विश्वमोहन और उनका परिवार शहर में घूमने जाता है। पहलीबार विश्वमोहन जी का परिवार शहर घूमने गया था। सड़कें, होटल, अट्टालिकाएं तथा वहां के ऐश्वर्य को देख वे मुग्ध हों उठे। घर वापस आने पर परिवार को अपना गांव काटने दौड़ता है। उनकी दृष्टि में अब गांव एक कैदखाना था, जहा न चाहते हुए भी रहना था। विश्वमोहन जी अपने परिवार की इस स्थिति को लक्ष्य कर उदास होकर सोचते- "छोटे लोगों को शुख भी दुखी क्यों कर जाता हैं?"5 परिवार गांव के हर चीज की तुलना शहर से करता। महानगर में रहने के सपने सजाता तथा अपने वास्तविक जीवन पर फब्तियाँ कसता। परिवार की इस मनःस्थिति को लक्ष्य करते हुए रेखा सेठी अपने लेख में लिखती है "संधान सामाजिक जीवन के नए केंद्र को उद्घाटित करती है जहाँ पैसे से खरीदी जाने वाली सुविधाओं के बिना छोटे काशबों में रहने वाला आदमी अपनी सामान्यता पर लज्जित है। शर्मिंदगी का एहसास अब बड़ी बातों के लिए नहीं होता।"6

आज गांव विस्तार पाकर शहर में बदल रहा है और शहर महानगरों में। फिर भी गांव और शहर की दूरी कम नहीं हुई। ग्रामीण रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन कर रहे हैं और शहर के लोग शांति की तलाश में गांव की और। हालांकि दोनों तरफ के लोग रतनलाल अशांत की तरह अशांत ही है। रतनलाल के पास जब कुछ नहीं था, तब भी अशांत था और जब सब कुछ मिल गया तब भी अशांत। संधान कहानी इसी तर्ज की है। ग्रामीण शहर की लालसा में खोए है तथा शरह के लोग ग्रामीण जीवन में। प्रस्तुत कहानी में लेखक का उद्देश्य सिर्फ महानगर और गांव की तुलना करके गांव को महानगर बड़ा दिखाना नहीं रहा। स्वयं प्रकाश शहर और गांव दोनों की आवश्यकता पर बल देते हैं। वे मानते हैं कि गांव और शहर दोनों का अपना महत्व है, अपनी पहचान है। दोनों एक दूसरे के पूरक है विरोधी नहीं। देश के विकास हेतु दोनों की आवश्यकता है। मगर लेखक मानते हैं- गांव में शहर से अधिक खुशहाली, शांति और सोहार्द है। शहर बजारवाद और उपभोकतवाद के चलते असंवेदशील हो गया है। इसलिए शहर और गांव की तुलना करते हुए भी लेखक ने गांव को दयनीय नहीं बताया। अंततः कह सकते हैं कि गांव का जीवन शहर के मुकाबले अधिक सुखकर है। शहर बाहर से जितना सुंदर लगता है वास्तव में उतना सुंदर नहीं है और गांव बाहर से जितना विपन्न लगता है वास्तव में उतना विपन्न नहीं। जिसने गांव को पहचाना उसके लिए यह स्वर्ग है।

निष्कर्ष

स्वयं प्रकाश की कहानियों का विषय व्यापक है। भाषा, शिल्प और संप्रेषण इत्यादि उनकी कहानी के प्राण हैं। यह सभी खूबियाँ लेखक की कहानियों में सहज देखि जा सकती है। दूसरी तरफ स्वयं प्रकाश सामाजिक यथार्थवाद के भी कहानीकार है। भूमंडलीकरण, पूंजीवाद, बाजारवाद उपभोक्तावाद ने देश की संस्कृति और विचारधारा को काफी नुकसान पहुंचाया है। देश पर गहरा संकट मंडरा रहा है। आम इंसान इस संकट से अनभिज्ञ है। वह इसमें फसता जा रहा है। उन्हे एहसास नहीं है कि भूमंडलीकरण, बजारवाद और उपभोगतावाद देश के लिए कितना बड़ा खतरा है। साहित्यकार इस संकट को बखूबी पहचानते हैं। अतः स्वयं प्रकाश इस समस्या को अपनी कहानी का विषय बनाकर समाज और देश को अनेवाले खतरे से आगाह कराते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्वयं प्रकाश, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली 2013, पृ. 8
2. स्वयं प्रकाश, मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण संन्ज प्रकाशन, दिल्ली 2014, पृ.11
3. स्वयं प्रकाश, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली 2013, पृ. 54
4. वही पृ.126
5. स्वयं प्रकाश, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली 2013, पृ.134
6. अंधी दौड़ की हिंसा, जनसत्ता, रविवार,26 नवंबर, 2006

Certificate No.:010212202333

multidisciplinary COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (on-line)
International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding this certificate to

अंसारी महमदनिज़ामुद्दीन

In recognition of the publication of the paper entitled

भूमंडलीकरण: समाज पर प्रभाव और स्वयं प्रकाश

Published in Volume 01, Issue 02, December 2023.

EDITOR IN CHIEF